मुखौटा

जमीन जायदाद तथा अन्य पारिवारिक झगड़ों के कारण दोनो भाईयों में परस्पर बोल चाल बन्द थी । यहां तक कि दोनों ने एक दूसरे की सूरत तक नही देखने की कसम खा रखी थी । रिश्तेदारों, मित्रो ,परिचितों के प्रयास भी उनमें मेलजोल करवाने में विफल रहे । बड़ा भाई गम्भीर बीमारी के कारण अस्पताल में भर्ती रहा,तब भी लोगों के समझााने के बावजूद छोटा दस–पांच रूपये के फल–फूल तक लेकर नीी गया । आखिर छोटे भाई से मिलने की हसरत लिये हुए बड़े भाई ने एक दिन प्राण त्याग दिये ।

घर के भीतर विलाप चल रहा था । बाहर शवयात्रा की तैयारी चल रही थी । लोग दुखी मुद्रा में खड़े हुए थे , तभी छोटा भाई रोता हुआ तेजी से आया और शव पर लगभग गिरता हुआ सा दहाड़े मार उठा– भैया,ऐसे चुपचाप क्यों लेटे हुए हो ? अपने छोटू से नही बोलोगो ? ये जमीन जायदाद, धन दौलत सब आप ले लो भैया । बोलते क्यों नही हो ? बोलो न भैया । क्या इसीलिये अपने छोटू को पाल–पोसकर,पढा–लिखा कर बड़ा किया था कि इस तरह रूठ कर चले जाओगे ।

जोर – जोर से आती उसकी आवाज को सुनकर बाहर खड़े लोगों के दुखी चेहरे पर मुस्कान सी तैर आई । .. .. सुरेश शर्मा